बाबा द्वारा दिए गए टाइटिलस का स्वरूप बनना

1. अलंकारी स्थिति में स्थित होने वाले।
2. निरहंकारी स्थिति में स्थित होने वाले
3. निराकारी स्थिति में स्थित होने वाले
4. विश्व को रोशन करने वाले दीपक
5. स्नेही
6. पद्मापद्म भाग्यशाली
7. कुल के दीपक
8. बाप की सुमरणी के मणके
9. सदा जागते हुए दीपक
10. बाप-दादा के नैनों के दीपक
11. सदा के विजयी

02.02.77

अव्यक्त पालना का रिटर्न

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न : मीठे बाबा, ब्राह्मण कुल के दीपक के प्रति आज क्या समझानी दी ?

उत्तर : मीठे बच्चे, ब्राह्मण कुल के दिपक के प्रति आज समझानी दी की :-

1. बड़े से बड़ा ब्राह्मण कुल है, ऐसे ब्राह्मण कुल के भी आप दीपक हो।
2. कुल के दीपक अर्थात् सदा अपनी स्मृति की ज्योति से ब्राह्मण कुल का नाम रोशन करता रहे।
3. ऐसे अपने को कुल के दीपक समझते हो?
4. सदा स्मृति की ज्योति जगी हुई है?
5. बुझ तो नहीं जाती?
6. अखंड ज्योति अर्थात् कभी भी बुझने वाली नहीं।
7. आपके जड़ चित्रों के आगे भी 'अखण्ड ज्योति' जगाते हैं।
8. चैतन्य अखण्ड ज्योति का ही वह यादगार है तो चैतन्य दीपक बुझ सकते हैं?
9. क्या बुझी हुई ज्योति अच्छी लगती है?
10. तो स्वयं को भी चेक करो, जब स्मृति की ज्योति बुझ जाती है तो कैसा लगता होगा? क्या वह अखण्ड ज्योति हुई?

02.02.77

मन की बात... बापदादा के साथ

मैं आत्मा :-

मीठे बाबा, टीचर्स को विशेष किस बात का ध्यान रखना है?

बापदादा :- प्यारे-मीठे बच्चे, सभी टीचर्स को विशेष एक बात का ध्यान रखना है :-

◆ कभी भी, किसी में भी रॉयल रूप में भी झुकाव न हो, किसी भी आत्मा के गुणों की तरफ, सेवा, सहयोग की तरफ, बुद्धि की तरफ, प्लानिंग (Planning;योजना) की तरफ झुकाव नहीं हो। उसी को अपना आधार बनाने से झुकाव होता है।

◆ जब किसी आत्मा का आधार हो जाता है तो बाप का आधार स्वत: ही निकल जाता है; और अब आगे चलकर अल्प काल का आधार हिल जाता है तो भटक जाते हैं। इसलिए कभी भी किसी आत्मा के किसी विशेष प्रभाव के कारण प्रभावित होना, यह 'महान भूल' है। *भूल नहीं महान भूल है।*

◆ *इसमें खुश न हो जाना कि सर्विस वृद्धि को पा रही है। यह अल्प काल का जलवा होता है।*

◆ फाउन्डेशन (Foundation;नींव) हिला तो सर्विस हिली। इसलिए कभी भी कोई आत्मा को आधार न बनाओ।

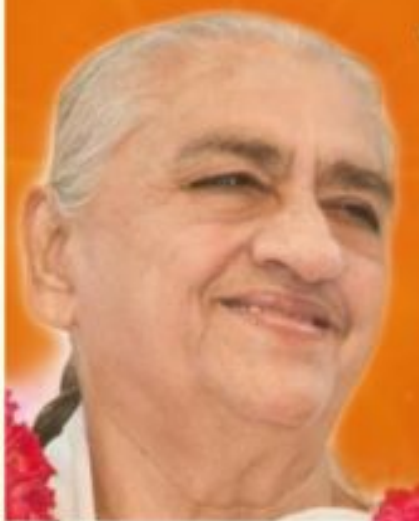

◆ ऐसे नहीं कि इसके कारण सर्विस वृद्धि को नहीं पायेगी, उन्नति नहीं होगी। यह कारण नहीं कालापन है, जो स्वच्छ आत्मा को काला कर देता है। यह बड़े से बड़ा दाग है।

◆ *किसी आत्मा को आधार बनाना - यह बड़े ते बड़ा फ्ला है। तो फ्लालेस (Flawless) नहीं बन सकेंगे।*

02.02.77

2-2-77 अव्यक्त वाणी का मुख्य बिंदु

आज बाबा ने बच्चों की महीमा मे उच्चारे शब्द

अलंकारी स्थिति मे रहनेवाले
निराकारी स्थिति मे रहनेवाले

निरहंकारी स्थिति मे रहनेवाले
विश्व को रोशन करने वाले

स्नेही
कुल के दीपक
जागते हुए दीपक

पदमापदम भाग्यशाली
बाप की सुमरणी के मणके
सदा के विजयी

बाप दादा के नयनों के दीपक

02-02-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं ब्राह्मण कुल का दीपक हूँ।।

ब्राह्मण कुल का दीपक अर्थात् सदा अपनी स्मृति की ज्योति से ब्राह्मण कुल का नाम रोशन करने वाली। साकारी सो अलंकरी।

02-02-77

सदा अलंकारी स्वरूप में स्थित रहने वाला ही स्वयं का तथा बाप का साक्षात्कार करा सकता है

विश्व को रोशन करने वाले दीपक

सदा अलंकारी

यह अलंकार ब्राह्मण जीवन का शृंगार हैं

निरंहकारी

स्नेही

पदमापदम भाग्यशाली

सदा के विजयी

बाप की सुमरणी के मणके

सदा जागते हुए दीपक

बाप-दादा के नैनों के दीपक

निराकारी स्थिति